मौर्योत्तरकालीन भारतीय धार्मिक स्थिति

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

इस काल में धार्मिक क्षेत्र की प्रमुख विशेषता थी: वैदिक या ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना तथा महायान बौद्ध धर्म का उदय और विकास| इस समय जैन धर्म के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन आया|

शुंग राजवंश की स्थापना के साथ ही ब्राह्मण धर्म की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित हुई| पुष्यमित्र शुंग और उनके उत्तराधिकारीयों ने वैदिक धर्म को प्रश्रय दिया| फलस्वरूप यज्ञ और बलि प्रथा का विकास हुआ| कुषाणों और सातवाहनों ने भी ब्राह्मण धर्म को बढ़ावा दिया|

अश्वमेध और बाजपेय यज्ञ पुनः होने लगे| सातवाहन अभिलेखों में भी अनेक वैदिक देवताओं का उल्लेख मिलता है| ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत वैष्णव संप्रदाय प्रमुख बन गए| कुबेर, बलि, राम इत्यादि की भी पूजा होने लगी| कर्मकांड के साथ-साथ भक्ति की भावना का भी प्रसार हुआ|

ब्राह्मण धर्म से प्रभावित होकर अनेक विदेशियों ने भी इस धर्म को अपना लिया| यूनानी राजा एतियालकिड्स के राजदूत हेलिओडोरस ने विदिशा में गरुड़ध्वज की स्थापना करवाई| शक शासक उषावदत ने भी वैदिक धर्म को अपनाया| हुविष्क शैव मत का पोषक था| अंतिम प्रमुख कुषाण वासुदेव का नाम भी इंगित करता है कि वह वैष्णव धर्मावलम्बी रहा होगा| ब्राहमण धर्म ने मूर्ति कला के विकास को भी प्रभावित किया|

मौर्योत्तर काल में जैन धर्म भी कम प्रभावशाली नहीं था| संभवतया ईसा की आरंभिक शताब्दी में जैन धर्म का दो संप्रदायों दिगंबर और श्वेतांबर में विभाजन स्पष्ट हो गया| जैन धर्म में भी भक्ति और पूजा की भावना प्रचलित हुई और तीर्थंकर की मूर्तियां भी बनी| उत्तरी भारत में मथुरा जैन धर्म का सबसे बड़ा केंद्र प्रतीत होता है| कलिंग में खारवेल ने इस धर्म को प्रश्रय देकर व्यापक बनाया|

ईशा की आरंभिक शताब्दियों में बौद्ध धर्म भी प्रभावशाली था| शुंगो द्वारा ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना और बौद्धों पर अत्याचार के बावजूद यह व्यापक और प्रभावशाली धर्म बना रहा| हिंद यूनानियों, शकों, सिथियनों, कुषाणों ने इस धर्म को अपनाया| यूनानी शासक मिनांडर ने इस धर्म से प्रभावित होकर स्वीकार किया| कुषाणों ने भी इसे प्रश्रय दिया| कनिष्क के सिक्कों पर बौद्ध धर्म के चिन्ह मिलते हैं| शक सातवाहनो के अधीन भी

दक्कन में इस धर्म के व्यापक रूप से प्रचलित होने का प्रमाण असंख्य चैत्यों, स्तूपों और गुहाओं से मिलता है| बौद्ध धर्म में भी भक्ति की भावना और मूर्ति पूजा बलवती बन गयी|

स्पष्ट है कि मौर्योत्तर काल में सामाजिक व्यवस्था में राजनतिक आर्थिक परिवर्तन के कारण व्यापक असर हुआ| इस समय कट्टर ब्राह्मणवादी धर्म के विस्तार के साथ ही विदेशियों और वर्णसंकरो को वर्णव्यवस्था में स्थान देते हुए वर्णव्यवस्था पर संभावित खतरें को दूर करने का भी प्रयास किया|

समाज में शूद्रों एवं महिलाओं की दशा ख़राब कही जा सकती है| हालाँकि कुछ जगह इसके ठीक होने के भी संकेत है| इस काल में वैदिक या ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना तथा महायान बौद्ध धर्म का उदय और विकास तथा जैन धर्म के स्वरूप में कुछ परिवर्तन आदि महत्वपूर्ण धार्मिक क्षेत्र की विशेषता थी|